

سُورَةُ الْحَجِّ

Surah 22 — Al-Hajj (The Pilgrimage) • Medinan • 78 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۚ

ऐ लोगों अपने परवरदिगार से डरते रहो (क्योंकि) क़यामत का ज़लज़ला (कोई मामूली नहीं) एक बड़ी (सख्त) चीज़ है

2

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۚ

जिस दिन तुम उसे देख लोगे तो हर दूध पिलाने वाली (डर के मारे) अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जायेगी और सारी हामला औरते अपने-अपने हमल (बेहिश्त से) गिरा देगी और (घबराहट में) लोग तुझे मतवाले मालूम होंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं हैं बल्कि खुदा का अज़ाब बहुत सख्त है कि लोग बदहवास हो रहे हैं

3

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ۚ

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बग़ैर जाने खुदा के बारे में (स्वाह म स्वाह) झगड़ते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं

4

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ ۖ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ ۖ يُضِلُّهُ ۖ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۖ

जिन (की पेशानी) के ऊपर (खते तक्रदीर से) लिखा जा चुका है कि जिसने उससे दोस्ती की हो तो ये यक़ीनन उसे गुमराह करके छोड़ेगा और दोज़ख के अज़ाब तक पहुँचा देगा

يَأْيُهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ ۚ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّن تَرَابٍ ۚ ثُمَّ مِّن نُّطْفَةٍ ۚ ثُمَّ مِّنْ عَلَقَةٍ ۚ ثُمَّ مِّنْ مُّضْغَةٍ ۚ مُّخَلَّقَةٍ ۚ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ ۚ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقَرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ۚ ثُمَّ لِّتَبْلُغُوا ۚ أَشَدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّن يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمْرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِّنْ ۚ بَعْدِ عِلْمٍ ۚ شَيْءًا ۚ وَتَرَىٰ الْأَرْضَ هَامِدَةً ۚ فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأُنْزِلَتْ مِّن كُلِّ زَوْجٍ ۚ بَهِيَجٍ ۚ

लोगों अगर तुमको (मरने के बाद) दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फे से उसके बाद जमे हुए खून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा (सूडौल हो) या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी कुदरत) ज़ाहिर करें (फिर तुम्हारा दोबारा ज़िन्दा) करना क्या मुश्किल है और हम औरतों के पेट में जिस (नुत्फे) को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर (तुम्हें पालते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो (क्रब्ल बुढ़ापे के) मर जाते हैं और तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो नाकारा ज़िन्दगी बुढ़ापे तक फेर लाए हैं जाते ताकि समझने के बाद सठिया के कुछ भी (खाक) न समझ सके और तो ज़मीन को मुर्दा (बेकार उफ़तादा) देख रहा है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने और उभरने लगती है और हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगती है तो ये कुदरत के तमाशे इसलिए दिखाते हैं ताकि तुम जानो

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهُ ۚ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهُ ۚ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۚ

कि बेशक खुदा बरहक़ है और (ये भी कि) बेशक वही मुर्दों को जिलाता है और वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है

وَاَنَّ السَّاعَةَ ؕ اٰتِيَةٌ ۚ لَا رَيْبَ فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مِّنْ فِى الْقُبُوْرِ

और क़यामत यक़ीनन आने वाली है इसमें कोई शक नहीं और बेशक जो लोग क़ब्रों में हैं उनको खुदा दोबारा ज़िन्दा करेगा

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَدِّلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ وَلَا هُدًى ۚ وَلَا كِتٰبٍ مُّنِيرٍ ۚ

और लोगों में से कुछ ऐसे भी है जो बेजाने बूझे बे हिदायत पाए बग़ैर रौशन किताब के (जो उसे राह बताए) खुदा की आयतों से मुँह मोड़े

9

ثَانِي عِطْفِهِ ۚ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَهُ ۖ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَنَذِيقُهُ ۚ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ

(स्वाहमस्वाह) खुदा के बारे में लड़ने मरने पर तैयार है ताकि (लोगों को) खुदा की राह बहका दे ऐसे (नाबकार) के लिए दुनिया में (भी) रूसवाई है और क़यामत के दिन (भी) हम उसे जहन्नुम के अज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे

10

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَاكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَمٍ ۚ لِلْعَبِيدِ

और उस वक्त उससे कहा जाएगा कि ये उन आमाँल की सज़ा है जो तेरे हाथों ने पहले से किए हैं और बेशक खुदा बन्दों पर हरगिज़ जुल्म नहीं करता

11

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ ۚ فَإِنْ أَصَابَهُ ۖ خَيْرٌ أَطْمَأَنَّ بِهِ ۚ وَإِنْ
أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ أُنْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِينُ

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो एक किनारे पर (खड़े होकर) खुदा की इबादत करता है तो अगर उसको कोई फायदा पहुँच गया तो उसकी वजह से मुतमईन हो गया और अगर कहीं उस कोई मुसीबत छू भी गयी तो (फौरन) मुँह फेर के (कुफ़र की तरफ़) पलट पड़ा उसने दुनिया और आखेरत (दोनों) का घाटा उठाया यही तो सरीही घाटा है

12

يَدْعُوا ۚ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ ۚ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ۚ ۚ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَلُ الْبَعِيدُ

खुदा को छोड़कर उन चीज़ों को (हाज़त के वक्त) बुलाता है जो न उसको नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं और न कुछ नफा ही पहुँचा सकते हैं

13

يَدْعُوا ۚ لِمَنْ ضَرُّهُ ۚ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ ۚ لِبَيْسِ الْمَوْلَىٰ وَلِبَيْسِ الْعَشِيرِ

यही तो पल्ले दरने की गुमराही है और उसको अपनी हाज़त रवाई के लिए पुकारता है जिस का नुक़सान उसके नफे से ज्यादा क़रीब है बेशक ऐसा मालिक भी बुरा और ऐसा रफ़ीक़ भी बुरा

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको (खुदा बेहश्त के) उन (हरे-भरे) बागात में ले जाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी बेशक खुदा जो चाहता है करता है

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ
ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ ۚ مَا يَغِیْظُ

जो शख्स (गुस्से में) ये बदगुमानी करता है कि दुनिया और आखेरत में खुदा उसकी हरगिज मदद न करेगा तो उसे चाहिए कि आसमान तक रस्सी ताने (और अपने गले में फाँसी डाल दे) फिर उसे काट दे (ताकि घुट कर मर जाए) फिर देखिए कि जो चीज़ उसे गुस्से में ला रही थी उसे उसकी तद्दीर दूर दफ़ा कर देती है

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ ءَايَاتٍ ۚ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِيَ مَن يُرِيدُ

(या नहीं) और हमने इस कुरान को यँ ही वाजेए व रौशन निशानियाँ (बनाकर) नाज़िल किया और बेशक खुदा जिसकी चाहता है हिदायत करता है

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالصَّبِيْنَ وَالنَّصْرَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ
أَشْرَكُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया (मुसलमान) और यहूदी और लामज़हब लोग और ईसाई और मजूसी (आतिशपरस्त) और मुशरेकीन (कुफ़ार) यकीनन खुदा उन लोगों के दरमियान क़यामत के दिन (ठीक ठीक) फ़ैसला कर देगा इसमें शक नहीं कि खुदा हर चीज़ को देख रहा है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ ۖ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۚ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ
الْعَذَابُ ۚ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِنْ مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۚ

क्या तुमने इसको भी नहीं देखा कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं और आफताब और माहताब और सितारे और पहाड़ और दरख्त और चारपाए (गरज कुल मखलूक़ात) और आदमियों में से बहुत से लोग सब खुदा ही को सज्जदा करते हैं और बहुतेरे ऐसे भी हैं जिन पर नाफ़रमानी की वजह से अज़ाब का (का आना) लाज़िम हो चुका है और जिसको खुदा ज़लील करे फिर उसका कोई इज़्जत देने वाला नहीं कुछ शक नहीं कि खुदा जो चाहता है करता है (18) सज्जदा

ۚ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا ۚ فِي رَبِّهِمْ ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ قُطِعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ
نَّارٍ ۖ يَصُبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ

ये दोनों (मोमिन व काफ़िर) दो फरीक़ हैं आपस में अपने परवरदिगार के बारे में लड़ते हैं गरज जो लोग काफ़िर हो बैठे उनके लिए तो आग के कपड़े केता किए गए हैं (वह उन्हें पहनाए जाएंगे और) उनके सरों पर खौलता हुआ पानी उँडेला जाएगा

يُصْهِرُ بِهِ ۚ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ

जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (आँतें वगैरह) और खालें सब गल जाएँगी

وَلَهُمْ مَّقْمِعٌ مِّنْ حَدِيدٍ ۚ

और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا ۚ مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا ۚ فِيهَا وَذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْحَرِيقِ

कि जब सदमों के मारे चाहेंगे कि दोज़ख से निकल भागें तो (गुर्ज़ मार के) फिर उसके अन्दर ढकेल दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) जलाने वाले अज़ाब के मज़े चखो

23

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ جَنَّٰتٍ ۖ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ ۚ وَلُؤْلُؤًا ۚ وَثِيْبًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۚ

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम भी किए उनको खुदा बेहश्त के ऐसे हरे-भरे बागों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे जारी होगी उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती (के हार) से सँवारा जाएगा और उनका लिबास वहाँ रेशमी होगा

24

وَهُدُوًا ۚ إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوًا ۚ إِلَى صِرَاطٍ الْحَمِيدِ

और (ये इस वजह से कि दुनिया में) उन्हें अच्छी बात (कलमाए तौहीद) की हिदायत की गई और उन्हें सज़ावारे हम्द (खुदा) का रास्ता दिखाया गया

25

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ
سَوَاءً الْعُكْفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ ۚ بِظُلْمٍ ۚ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ

बेशक जो लोग काफिर हो बैठे और खुदा की राह से और मस्जिदें मोहतरम (खानए काबा) से जिसे हमने सब लोगों के लिए (माबद) बनाया है (और) इसमें शहरी और बेरूनी सबका हक बराबर है (लोगों को) रोकते हैं (उनको) और जो शख्स इसमें शरारत से गुमराही करे उसको हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखा देंगे

26

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا ۚ وَطَهَّرَ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ
وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब हमने इबराहीम के ज़रिये से इबराहीम के वास्ते खानए काबा की जगह ज़ाहिर कर दी (और उनसे कहा कि) मेरा किसी चीज़ को शरीक न बनाना और मेरे घर को तवाफ और क़याम और रूकू सुजूद करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखना

27

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا ۚ وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ ۚ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ
عَمِيقٍ ۚ

और लोगों को हज की खबर कर दो कि लोग तुम्हारे पास (ज़ूक दर ज़ूक) ज्यादा और हर तरह की दुबली (सवारियों पर जो राह दूर दराज़ तय करके आयी होगी चढ़-चढ़ के) आ पहुँचेंगे

لِيَشْهَدُوا ۚ مَنِّعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا ۚ اَسْمَ اللّٰهِ فِيْ اَيَّامٍ ۚ مَّعْلُوْمَتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ ۚ
بِهِيْمَةٍ اَلَّا نَعْمَ ۚ فَكُلُوا ۚ مِنْهَا وَاَطْعِمُوا ۚ الْبَائِسَ الْفَقِيْرَ

ताकि अपने (दुनिया व आखेरत के) फायदो पर फायज़ हों और खुदा ने जो जानवर चारपाए उन्हें अता फ़रमाए उनपर (ज़िबाह के वक्त) चन्द मुअय्युन दिनों में खुदा का नाम लें तो तुम लोग कुरबानी के गोश्त खुद भी खाओ और भूखे मोहताज को भी खिलाओ

ثُمَّ لِيَقْضُوا ۚ تَفَثَهُمْ وَلِيُوفُوا ۚ نُذُوْرَهُمْ وَلِيَطَّوَّفُوا ۚ بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ

फिर लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी (बदन की) कसाफ़त दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और क़दीम (इबादत) ख़ानए काबा का तवाफ़ करें यही हुक्म है

ذٰلِكَ وَمَنْ يُعْظِمِ حُرْمَتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ ۚ لَّهِ ۚ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ ۚ وَاُحِلَّتْ لَكُمْ الْاَنْعَامُ اِلَّا
مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ ۚ فَاَجْتَنِبُوا ۚ الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاَجْتَنِبُوا ۚ قَوْلَ الْزُّوْرِ

और इसके अलावा जो शख्स खुदा की हुस्मत वाली चीज़ों की ताज़ीम करेगा तो ये उसके पवरदिगार के यहाँ उसके हक्क में बेहतर है और उन जानवरों के अलावा जो तुमसे बयान किए जाँएंगे कुल चारपाए तुम्हारे वास्ते हलाल किए गए तो तुम नापाक बुतों से बचे रहो और लगो बातें गाने वगैरह से बचे रहो

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهِ ۚ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ
الطَّيْرُ اَوْ تَهْوٰى بِهٖ الرِّيحُ فِى مَكَانٍ ۚ سَحِيْقٍ ۚ

निरे खरे अल्लाह के होकर (रहो) उसका किसी को शरीक न बनाओ और जिस शख्स ने (किसी को) खुदा का शरीक बनाया तो गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा फिर उसको (या तो दरमियान ही से) कोई (मुरदा ख़्वार) चिड़िया उचक ले गई या उसे हवा के झोंके ने बहुत दूर जा फेंका

ذٰلِكَ وَمَنْ يُعْظِمِ شَعْرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوٰى الْقُلُوْبِ

ये (याद रखो) और जिस शख्स ने खुदा की निशानियों की ताज़ीम की तो कुछ शक नहीं कि ये भी दिलों की परहेज़गारी से हासिल होती है

لَكُمْ فِيهَا مَنَفَعٌ إِلَىٰ أَجَلٍ ۖ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ

और इन चार पायों में एक मुअय्युन मुदत तक तुम्हारे लिये बहुत से फायदे हैं फिर उनके ज़िबाह होने की जगह क़दीम (इबादत) खानए काबा है

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ ۖ جَعَلْنَا مَنَسَكًا ۖ لِّيَذْكُرُوا ۚ أَسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيمَةٍ
الْأَنْعَمِ ۚ فَالْهُكْمُ لِلَّهِ ۚ وَحِدٌ ۚ فَلَهُ ۚ أَسْلِمُوا ۚ ۚ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ

और हमने तो हर उम्मत के वास्ते कुरबानी का तरीका मुक़रर कर दिया है ताकि जो मवेशी चारपाए खुदा ने उन्हें अता किए हैं उन पर (ज़िबाह के वक्त) खुदा का नाम ले ग़रज़ तुम लोगों का माबूद (वही) यकता खुदा है तो उसी के फरमाबरदार बन जाओ

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ
وَمِمَّا رَزَقْنَهُمْ يُنفِقُونَ

और (ऐ रसूल हमारे) गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को (बेहशत की) खुशख़बरी दे दो ये वह हैं कि जब (उनके सामने) खुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल सहम जाते हैं और जब उनपर कोई मुसीबत आ पड़े तो सब्र करते हैं और नमाज़ पाबन्दी से अदा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ ۚ فَاذْكُرُوا ۚ أَسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا
صَوَافٍ ۚ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا ۚ مِنْهَا وَأَطْعِمُوا ۚ الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَلِكَ
سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

और कुरबानी (मोटे गदबदे) ऊँट भी हमने तुम्हारे वास्ते खुदा की निशानियों में से करार दिया है इसमें तुम्हारी बहुत सी भलाईयाँ हैं फिर उनका ताँते का ताँता बाँध कर ज़िबाह करो और उस वक्त उन पर खुदा का नाम लो फिर जब उनके दस्त व बाजू काटकर गिर पड़े तो उन्हीं से तुम खुद भी खाओ और केनाअत पेशा फ़कीरों और माँगने वाले मोहताजों (दोनों) को भी खिलाओ हमने यूँ इन जानवरों को तुम्हारा ताबेए कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो

لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا ۚ اللَّهُ عَلَىٰ مَا هَدَيْكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ

खुदा तक न तो हरगिज़ उनके गोشت ही पहुँचेगे और न खून मगर (हाँ) उस तक तुम्हारी परहेज़गारी अलबत्ता पहुँचेगी खुदा ने जानवरों को (इसलिए) यूँ तुम्हारे काबू में कर दिया है ताकि जिस तरह खुदा ने तुम्हें बनाया है उसी तरह उसकी बड़ाई करो

ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ ۚ كَفُورٍ

और (ऐ रसूल) नेकी करने वालों को (हमेशा की) खुशखबरी दे दो इसमें शक नहीं कि खुदा ईमानवालों से कुफ़ार को दूर दफा करता रहता है खुदा किसी बददयानत नाशुक्के को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ

जिन (मुसलमानों) से (कुफ़ार) लड़ते थे चूँकि वह (बहुत) सताए गए उस वजह से उन्हें भी (जिहाद) की इजाज़त दे दी गई और खुदा तो उन लोगों की मदद पर यकीनन कादिर (वत वाना) है

الَّذِينَ أُخْرِجُوا ۖ مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا ۖ رَبُّنَا اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۖ لَهْدَمَتْ صَوْمِعُ وَيَعٍ ۖ وَصَلَوْتُ ۖ وَمَسْجِدُ يُذَكِّرُ فِيهَا أَسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۖ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ

ये वह (मज़लूम हैं जो बेचारे) सिर्फ़ इतनी बात कहने पर कि हमारा परवरदिगार खुदा है (नाहक़) अपने-अपने घरों से निकाल दिए गये और अगर खुदा लोगों को एक दूसरे से दूर दफा न करता रहता तो गिरजे और यहूदियों के इबादत खाने और मजूस के इबादतखाने और मस्जिद जिनमें कसरत से खुदा का नाम लिया जाता है कब के कब ढहा दिए होते और जो शरक्स खुदा की मदद करेगा खुदा भी अलबत्ता उसकी मदद ज़रूर करेगा बेशक़ खुदा ज़रूर ज़बरदस्त ग़ालिब है

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا ۖ الصَّلَاةَ وَءَاتَوْا ۖ الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا ۖ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا ۖ عَنِ الْمُنْكَرِ ۖ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ

ये वह लोग हैं कि अगर हम इन्हें रूए ज़मीन पर काबू दे दे तो भी यह लोग पाबन्दी से नमाजे अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे-अच्छे काम का हुक्म करेंगे और बुरी बातों से (लोगों को) रोकेंगे और (यूँ तो) सब कामों का अन्जाम खुदा ही के एख्तेयार में है

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ وَعَادٌ ۖ وَثَمُودُ

और (ऐ रसूल) अगर ये (कुफ़ार) तुमको झुठलाते हैं तो कोई ताज्जुब की बात नहीं उनसे पहले नूह की क्रौम और (क्रौमे आद और समूद)

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۚ

और इबराहीम की क्रौम और लूत की क्रौम

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۚ وَكَذَّبَ مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

और मदीयन के रहने वाले (अपने-अपने पैगम्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा (भी) झुठलाए जा चुके हैं तो मैंने काफिरों को चन्द ढील दे दी फिर (आखिर) उन्हें ले डाला तो तुमने देखा मेरा अज़ाब कैसा था

فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۖ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْسَ ۚ مُعْطَلَةٌ ۚ وَقَصْرٌ ۚ مَشِيدٌ

गरज़ कितनी बस्तियाँ हैं कि हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और वह सरकश थीं पस वह अपनी छतों पर ढही पड़ी हैं और कितने बेकार (उजड़े हुए) और कितने) मज़बूत बड़े-बड़े ऊँचे महल (वीरान हो गए)

أَفَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ ۚ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ ءَاذَانٌ ۚ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَىٰ الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَىٰ الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिर नहीं ताकि उनके लिए ऐसे दिल होते हैं जैसे हक़ बातों को समझते या उनके ऐसे कान होते जिनके ज़रिए से (सच्ची बातों को) सुनते क्योंकि आँखें अंधी नहीं हुआ करती बल्कि दिल जो सीने में है वही अन्धे हो जाया करते हैं

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ ۚ
مِّمَّا تَعُدُّونَ

और (ऐ रसूल) तुम से ये लोग अज़ाब के जल्द आने की तमन्ना रखते हैं और खुदा तो हरगिज़ अपने वायदे के खिलाफ नहीं करेगा और बेशक (क़यामत का) एक दिन तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस के बराबर है

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أُمْلِيتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَى الْمَصِيرِ

और कितनी बस्तियाँ हैं कि मैंने उन्हें (चन्द) मोहलत दी हालाँकि वह सरकश थी फिर (आखिर) मैंने उन्हें ले डाला और (सबको) मेरी तरफ लौटना है

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا ۚ لَكُمْ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि लोगों में तो सिर्फ तुमको खुल्लम-खुल्ला (अज़ाब से) डराने वाला हूँ

فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

पस जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए (आखिरत में) उनके लिए बख्शिश है और बेहिश्त की बहुत उम्दा रोज़ी

وَالَّذِينَ سَعَوْا ۚ فِي ءَايَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۚ أُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के झुठलाने में हमारे) आजिज़ करने के वास्ते कोशिश की यही लोग तो जहन्नुमी हैं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ ۚ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۚ
فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ ءَايَتِهِ ۚ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी भेजा तो ये ज़रूर हुआ कि जिस वक्त उसने (तबलीगो एहकाम की) आरज़ू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में (लोगों को बहका कर) खलल डाल दिया फिर जो वस वसा शैतान डालता है खुदा उसे बेट देता है फिर अपने एहकाम को मज़बूत करता है और खुदा तो बड़ा वाक्फिकार दाना है

53

لِيَجْعَلَ مَا يُلْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً ۚ لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۚ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

और शैतान जो (वसवसा) डालता (भी) है तो इसलिए ताकि खुदा उसे उन लोगों के आजमाइश (का ज़रिया) करार दे जिनके दिलों में (कुफ्र का) मर्ज है और जिनके दिल सख्त हैं और बेशक (ये) ज़ालिम मुशरेकीन पल्ले दरजे की मुखालेफ़त में पड़े हैं

54

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا ۚ بِهِ ۚ فَتُخْبِتَ لَهُ ۚ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और (इसलिए भी) ताकि जिन लोगों को (कुतूबे समावी का) इल्म अता हुआ है वह जान लें कि ये (वही) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ठीक ठीक (नाज़िल) हुई है फिर (ये ख्याल करके) इस पर वह लोग ईमान लाए फिर उनके दिल खुदा के सामने आजिज़ी करें और इसमें तो शक ही नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया उनकी खुदा सीधी राह तक पहुँचा देता है

55

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فِي مَرِيَةٍ ۚ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ

और जो लोग काफिर हो बैठे वह तो कुरान की तरफ से हमेशा शक ही में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि क़यामत यकायक उनके सर पर आ मौजूद हो या (यूँ कहो कि) उनपर एक सख्त मनहूस दिन का अज़ाब नाज़िल हुआ

56

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

उस दिन की हुकूमत तो ख़ास खुदा ही की होगी वह लोगों (के बाहमी एख्तेलाफ) का फ़ैसला कर देगा तो जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए हैं वह नेअमतों के (भरे) हुए बाग़ात (बेहश्त) में रहेंगे

57

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो यही वह (कम्बख्त) लोग हैं

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا ۖ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا ۖ أَوْ مَاتُوا ۖ لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا
حَسَنًا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

जिनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है जिन लोगों ने खुदा की राह में अपने देस छोड़े फ़िर शहीद किए गए या (आप अपनी मौत से) मर गए खुदा उन्हें (आखिरत में) ज़रूर उम्दा रोज़ी अता फ़रमाएगा

لِيُدْخِلَنَّهُمْ مُدْخَلًا ۖ يَرْضَوْنَهُ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ

और बेशक तमाम रोज़ी देने वालों में खुदा ही सबसे बेहतर है वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह (बेहिशत) पहुँचा देगा जिससे वह निहाल हो जाएँगे

ۚ ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ۖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ
غَفُورٌ

और खुदा तो बेशक बड़ा वाकिफ़कार बुर्दवार है यही (ठीक) है और जो शख्स (अपने दुश्मन को) उतना ही सताए जितना ये उसके हाथों से सताया गया था उसके बाद फिर (दोबारा दुश्मन की तरफ़ से) उस पर ज्यादाती की जाए तो खुदा उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۖ بَصِيرٌ

बेशक खुदा बड़ा माफ़ करने वाला बख़शने वाला है ये (मदद) इस वजह से दी जाएगी कि खुदा (बड़ा क़ादिर है वही) तो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और इसमें भी शक नहीं कि खुदा सब कुछ जानता है

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۖ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ

(और) इस वजह से (भी) कि यक़ीनन खुदा ही बरहक़ है और उसके सिवा जिनको लोग (वक्ते मुसीबत) पुकारा करते हैं (सबके सब) बातिल हैं और (ये भी) यक़ीनी (है कि) खुदा ही (सबसे) बुलन्द मर्तबा बुर्जुग़ है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۙ

अरे क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि खुदा ही आसमान से पानी बरसाता है तो ज़मीन सर सब्ज़ (व शादाब) हो जाती है बेशक खुदा (बन्दों के हाल पर) बड़ा मेहरबान वाक्किफ़कार है

لَهُ ۙ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है और इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा (सबसे) बेपरवाह (और) सज़ावार हम्द है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلُكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَّءُوفٌ ۙ رَحِيمٌ ۙ

क्या तूने उस पर भी नज़र न डाली कि जो कुछ रूए ज़मीन में है सबको खुदा ही ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और कश्ती को (भी) जो उसके हुक्म से दरिया में चलती है और वही तो आसमान को रोके हुए है कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर (जब) उसका हुक्म होगा (तो गिर पड़ेगा) इसमें शक नहीं कि खुदा लोगों पर बड़ा मेहरबान व रहमवाला है

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۙ

और वही तो क़ादिर मुत्तलिक़ है जिसने तुमको (पहली बार माँ के पेट में) जिला उठाया फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको दोबारा ज़िन्दगी देगा

لِكُلِّ أُمَّةٍ ۖ جَعَلْنَا مَنَسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۚ فَلَا يُنْزِعُ عَنْكَ فِي الْأَمْرِ ۙ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى ۙ مُسْتَقِيمٌ ۙ

इसमें शक नहीं कि इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है (ऐ रसूल) हमने हर उम्मत के वास्ते एक तरीक़ा मुकर्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं फिर तो उन्हें इस दीन (इस्लाम) में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ बुलाए जाओ

وَإِنْ جَدَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ

बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो और अगर (इस पर भी) लोग तुमसे झगड़ा करें तो तुक कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो खुदा उससे खूब वाकिफ़ है

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

जिन बातों में तुम बाहम झगड़ा करते थे क़यामत के दिन खुदा तुम लोगों के दरमियान (ठीक) फ़ैसला कर देगा

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ

(ऐ रसूल) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है खुदा यक़ीनन जानता है उसमें तो शक नहीं कि ये सब (बातें) किताब (लौहे महफूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ ۚ سُلْطَانٌ ۚ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۚ

बेशक ये (सब कुछ) खुदा पर आसान है और ये लोग खुदा को छोड़कर उन लोगों की इबादत करते हैं जिनके लिए न तो खुदा ही ने कोई सनद नाज़िल की है और न उस (के हक़ होने) का खुद उन्हें इल्म है और क़यामत में तो ज़ालिमों का कोई मददगार भी नहीं होगा

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ الْمُنْكَرَ ۚ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ قُلْ أَفَأَنْبِيَكُمْ بِشَرٍّ ۚ مِنْ ذَلِكُمْ ۚ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَبُسَّ الْمَصِيرُ ۚ

और (ऐ रसूल) जब हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें उनके सामने पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम (उन) काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) देखते हो (यहाँ तक कि) क़रीब होता है कि जो लोग उनको हमारी आयातें पढ़कर सुनाते हैं उन पर ये लोग हमला कर बैठे (ऐ रसूल) तुम कह दो (कि) तो क्या मैं तुम्हें इससे भी कहीं बदतर चीज़ बता दूँ (अच्छा) तो सुन लो वह जहन्नुम है जिसमें झोंकने का वायदा खुदा ने काफ़िरों से किया है

يَأْيُهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ ۚ فَاسْتَمِعُوا ۚ لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا ۚ وَلَوْ اجْتَمَعُوا ۚ لَهُ ۚ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ

और वह क्या बुरा ठिकाना है लोगों एक मसल बयान की जाती है तो उसे कान लगा के सुनो कि खुदा को छोड़कर जिन लोगों को तुम पुकारते हो वह लोग अगरचे सब के सब इस काम के लिए इकट्ठे भी हो जाएँ तो भी एक मक्खी तक पैदा नहीं कर सकते और कहीं मक्खी कुछ उनसे छीन ले जाए तो उससे उसको छुड़ा नहीं सकते (अजब लुत्फ है) कि माँगने वाला (आबिद) और जिससे माँग लिया (माबूद) दोनों कमज़ोर हैं

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ

खुदा की जैसे कद्र करनी चाहिए उन लोगों ने न की इसमें शक नहीं कि खुदा तो बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا ۖ وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۚ بَصِيرٌ ۚ

खुदा फरिश्तों में से बाज़ को अपने एहकाम पहुँचाने के लिए मुन्तख़िब कर लेता है

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

और (इसी तरह) आदमियों में से भी बेशक खुदा (सबकी) सुनता देखता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका है) (खुदा सब कुछ) जानता है

يَأْيُهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اِرْكَعُوا ۚ وَاسْجُدُوا ۚ وَاعْبُدُوا ۚ رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا ۚ الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ

और तमाम उमूर की रूजू खुदा ही की तरफ होती है ऐ ईमानवालों रूकू करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो

وَجَاهِدُوا ۚ فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَآتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا ۚ بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ

ताकि तुम कामयाब हो और जो हक़ जिहाद करने का है खुदा की राह में जिहाद करो उसी ने तुमको बरगुज़ीदा किया और उमूरे दीन में तुम पर किसी तरह की सख्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम ने मजहब को (तुम्हारा मज़हब बना दिया उसी (खुदा) ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान (फरमाबरदार बन्दे) नाम रखा और कुरान में भी (तो जिहाद करो) ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नामज़ पढ़ा करो और ज़कात देते रहो और खुदा ही (के एहकाम) को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है तो क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है